भारतीय भाषाओं की
कहानियाँ-कविताएँ

रजत जयंती विशेषांक

25
वर्ष

60 रुपए

वागर्थ

अंक 294-295
जनवरी-फरवरी 2020

भारतीय साहित्य : वर्तमान परिदृश्य

हरीश त्रिवेदी के. सच्चिदानंदन रमाकांत रथ प्रतिभा राय इंद्रनाथ चौधुरी ज्ञानेंद्र पांडेय
राजेश जोशी अरुण कमल टी पी अशोक मु. मेत्ता आशा बागे के शिवा रेड्डी अमर मित्र
शहजाद फिरदउस येसे दरजे थोंगछी तेनजेम विजय कुमार सिंह

भारतीय भाषा परिषद

ISSN : 2394-1723

वागर्थ

भारतीय भाषा परिषद की मासिक पत्रिका
वर्ष 26, अंक 294-295, जनवरी-फरवरी 2020

संरक्षक
इंद्रनाथ चौधुरी
स्वपन चक्रवर्ती

संपादक
शंभुनाथ

प्रबंध संपादक
बिमला पोद्दार

प्रकाशक
डॉ. कुसुम खेमानी

संपादन सहयोग
अंक सज्जा
सुशील कान्ति

संपादकीय विभाग
36 ए, शेक्सपियर सरणी
कोलकाता-700017
vagarth.hindi@gmail.com
7449503734
(दिन 12 बजे से संध्या 6 बजे)

आवरण
तारक नाथ राय

रजत जयंती अंक

संपादकीय 6

परिचर्चा

भारतीय साहित्य : वर्तमान परिदृश्य : **हरीश त्रिवेदी/ के. सच्चिदानंदन/रमाकांत रथ/प्रतिभा राय/इंद्रनाथ चौधुरी/ज्ञानेंद्र पांडेय/राजेश जोशी/अरुण कमल/ टी.पी.अशोक/मु. मेत्ता/आशा बगे/के शिवा रेड्डी/ अमर मित्र/शहजाद फिरदउस/येसे दरजे थोंगछी/ तैनजेम विजय कुमार सिंह**
(प्रस्तुति : **मनोज मोहन, सुशील कान्ति**) 13

हिंदी

कहानियाँ

शैली मेरी बाकी उसका : **विष्णु नागर** 54

सच था सच नहीं था : **संजय कुंदन** 59

नाच : **शेखर मल्लिक** 67

कविताएँ

अरुण कमल/राजेश जोशी/अनामिका 80

बांग्ला

कहानियाँ

प्राकृतिक : **समरेश मजुमदार** (अनुवाद : मृत्युंजय) 89

फेऊ : **प्रचेत गुप्ता** (अनुवाद : मृत्युंजय) 98

कविताएँ

जय गोस्वामी (अनुवाद : मंजु श्रीवास्तव) 107

तेलुगु

कहानियाँ

प्रेम और आइंस्टीन : **केदावतीगंटी कुटुंब राव** (अनुवाद : नरेंद्र राय) 109

रीठी के पत्ते : **चासो** (अनुवाद : सुशील कान्ति) 115

दावत : **खदीर बाबू** (अनुवाद : जे.एल.रेड्डी) 119

गुजराती

कहानी

दुःस्वप्न : **मीनल दवे** (अनुवाद : विजय शर्मा) 126

कविताएँ

सरूप ध्रुव (अनुवाद : प्रीति सिंघी) 130

अंग्रेजी

कहानियाँ

ठंडे पानी का कुआँ : **अरविंद अडिग** 132

फांक : **प्रज्वल पराजुली** (अनुवाद : उपमा ऋचा) 140

कविताएँ

कमला दास, गौरी देशपांडे, सुकृता पॉल कुमार, सुदीप सेन (अनुवाद : बालकृष्ण काबरा ऐतेश) 144

पंजाबी

कहानी

मानचित्र : **जगतारजीत सिंह** (अनुवाद : सुशील कान्ति) 150

कविता

सुरजित पातर (अनुवाद : अवधेश प्रसाद सिंह) 154

तमिल

कहानियाँ

पिताजी को क्या बताऊँ : **अशोक मित्रन** (अनुवाद : जमुना कृष्णराज) 155

कूड़े : **इंद्रा सौंदर राजन** (अनुवाद : अलमेलु कृष्णन) 159

कविताएँ

मु. मेथा (अनुवाद : यमुना कृष्णराज) 164

मराठी

कहानियाँ

नामू धोबी : **पु ल देशपांडे** (अनुवाद : मंजु श्रीवास्तव) 166

उलट-फेर : **सदानंद देशमुख** (अनुवाद : भगवान वैद्य 'प्रखर') 173

कविताएँ

संदीप शिवाजीराव जगदाले/अविनाश गायकवाड़ (अनुवाद : सुनीता डागा) 182

कन्नड़

कहानी

यहाँ जो आए हैं कहीं नहीं जाते : **के.वी.तिरुमलेश** (अनुवाद : डी.एन.श्रीनाथ) 185

कविताएँ

जी एस शिवरुद्रप्पा/चंद्रशेखर कंबार (अनुवाद : अवधेश प्रसाद सिंह) 189

उर्दू

कहानी

कटे हुए तार : **साजिद रशीद** (अनुवाद : स्वयं लेखक) 191

कविताएँ

अदिल रज़ा मंसूरी 197

मलयालम

कहानी

शत्रु : **बेन्यामिन** (अनुवाद : संतोष अलेक्स) 198

असमिया

कहानी

ठिकाना : **निरुपमा बरगोहांईं** (अनुवाद : मृत्युंजय) 200

कविताएँ

महेंद्र बोरा/हीरेन भट्टाचार्य जोनमनी दास/देवप्रसाद तालुकदार (अनुवाद : संजय राय) 207

संस्कृत

कविताएँ

राधावल्लभ त्रिपाठी/हर्षदेव माधव

सरूप ध्रुव

(1948) गुजराती की प्रसिद्ध कवयित्री और नाटककार। स्त्रियों, अल्पसंख्यकों और दलितों के हित में कई काम किए। एक संस्था 'संवेदन सांस्कृत मंच' में सक्रिय।

हाथों में सब कुछ

क्षण भर में
शहर तब्दील हो गया
कंकड़ पत्थर खंजर उस्तरा में
चिनगारी लपट राख और बरबादी में

क्षण भर में
भीड़ ने हथौड़ों कुदालों बेलचों और हथगोलों से
शहर को चूर-चूर कर दिया
मेरी कलम मानो इतिहास के कंकालों से जा टकराई
हवा चीख उठी जैसे
मौत ही लाशों के रूप में नींद से जगी हो
मौत की चक्रवाती हवा
सभ्यता के स्तंभों को हिला रही है
सब धूल में मिला देना जिंदगी का जैसे विश्वास हो
सिकुड़े पंजे फैले खून चारों ओर
पल भर में आंखें अंधी हो गईं और दिशाएँ धुंधली
इंसानियत की चमड़ी गल गई थी

मैं हूँ कवि
महज एक संवाददाता की तरह जी नहीं सकती
न ही दरबार के चारण की तरह
मैं अपने दांत भींचते हुए बोलूंगी
खुलकर बोलूंगी अपनी भाषा में बिना रुके
पूरी साजिश के बारे में
पर इसके लिए
मुझे अपनी कलम फिर हासिल करनी होगी
अंधेरे गहरे कुएँ से-
अपने पिता के कुएं से
अपने पूर्वजों के कुएं से
उस कुएं से
जिसमें उन औरतों ने लज्जा से भर कर
अंतिम शरण के लिए छलांग लगा दी थी
मुझे बंशी का कांटा फेंकना होगा
और बाहर खींच लानी होगी अपनी कलम
जो होगी बिलकुल एक नई कलम
सिर्फ और सिर्फ मेरे हाथों की!

जीने की वजह

नहीं, मैं नहीं चाहती पढ़ना कलमा
बदलना खुद को सरूप से सलमा में
क्योंकि मैं उन सबसे अलग नहीं हूँ
उन सलमाओं फातिमाओं सुरैयाओं
और जहीराओं से
जो इस शहर की हैं इस देश की हैं इस विश्व की हैं
इस धरती पर जब-जब दुःशासन
उनके कपड़े फाड़ता है
मैं अपने को भी नंगा महसूस करती हूँ
जब-जब
दरिंदे उनके जिस्म को छूते हैं

रगड़ते उघाड़ते दबाते
चूसते फाड़ते छेदते रौंदते और
निर्दयता से मार डालते हैं
मैं भी बलि चढ़ती हूँ
उन सैकड़ों लिंगों-खंजरों से!

जब भी
रसोईघर का चूल्हा नरभक्षी मगरमच्छ बनता है
मैं बदल जाती हूँ
आग की लपटों राख और हवा में
हर पल मरती हूँ इन दिनों तिल-तिल कर
जब भी कोई भूखा अनाथ बच्चा
दूध के लिए रोता है
मेरी छातियाँ दूध से उफन आती हैं उनके लिए
उन सभी के लिए

जब भी
रहमानों सुलेमानों इफरानों अमनों और
इमरानों को काटा जाता है
तलवारों हँसियों और त्रिशूलों से
मेरा आंगन भी सुनसान रहता है और बिस्तर खाली
मेरी मेहंदी लगी हथेलियों की खाल उघड़ जाती है

जब भी
मेरे शहर अहमदाबाद
साहपुर दरियापुर जुहापुरा और जार्डन रोड जलते हैं
बडोडरा की बाडी हलोल चंपानेर पानवाड और
गोधरा में उठती है गंध जलती देहों की
नहा जाती है व्यावसायिक केंद्रों की इमारतें खून से
होते हैं हर तरफ रक्त और मांस
सोचती हूँ
क्या कोई वजह है कि मैं जिंदा रहूँ?

एक क्षण रुको-अपनी वाणी संभालो कवि
तुम्हारा कभी नाश नहीं होगा
उन सलमाओं सुलेमानों और
शाहपुरों के पक्ष में खड़ी
तुम सरूप हो
हालांकि तुम्हारे पास है लिखने का आभिजात्य
और जीवन की विलासिता
फिर भी कम-से-कम इतना तो कर ही सकती हो
जियो उन उत्पीड़ितों की खातिर
अपना हाथ उठाओ उठाओ अपनी कलम
उन सभी के लिए
बताओ कवि क्या तैयार हो?

धधकती आग

मैं धधकती आग में सांस ले रही हूँ मेरे दोस्तो!
मैं चकमक पत्थर पर चोट कर रही हूँ
हजारों वर्षों के मसालेदार खुशबुओं से भरे विचार
हैं मेरे खाद्य
मैं शव हूँ मेरे दोस्त, एक ममी
मैं खूंखार हँसी हँसती हूँ
विरासत में पाए हैं सिर्फ दांत और पंजे
उधार की जबान से भौंकती हूँ मेरे दोस्तो!

मैं एक पत्थर हूँ जो टकराता है
जगमगाते शीशे के नगर से
फँस जाता हूँ शीशों की दरारों के बीच
जो बढ़ती जाती हैं इंच-दर-इंच
मैं दरारों के बीच कहीं होती हूँ
सुबह मैं अपने हथियार निकालती हूँ दोस्तो!
उनकी पैनी धार अपनी हथेली पर परखती हूँ
रात के अंधेरे का मैं अजगर हूँ
मेरी पूंछ मेरे मुंह में है मेरे दोस्तो
अपने लिए ही हूँ मैं एक दानव
मेरी गर्दन एक फंदे में है
शायद कोई और है जो खींच रहा है रस्सी
मैं लटकी हुई हूँ एक निर्जन में
मैं नहीं चाहती हूँ मरना लेकिन मरती हूँ
जरूरत नहीं मरने की फिर भी मरती हूँ।

अनुवाद : प्रीति सिंघी
513/बी, ब्लॉक-एम, प्रथम तल, न्यू अलीपुर, कोलकाता-700053 मो.9830150362